गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय

बाँसवाड़ा 327001 (राजस्थान)

राष्ट्रीय वेद विमर्श

वेद एवं वेद विज्ञान : सामयिक प्रासंगिकता

22-23 दिसम्बर 2023

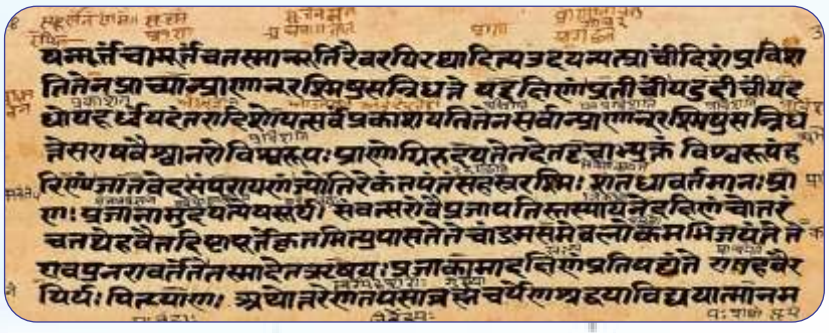

राष्ट्रीय वेद विमर्श
वेद एवं वेद विज्ञान : सामयिक प्रासंगिकता
22–23 दिसम्बर 2023

वाणी का वैभव, बाँस की प्रचुरता और बाँसिया भील के प्रखर पुरुषार्थ और दूरदर्शिता की आदर्श और सम्यक परिणति

अरावली की हरियाली से आच्छादित और माँ माही के दिव्य आशीर्वाद से अभिषिक्त 'वाग्वर गंगा' बाँसवाड़ा दक्षिणी राजस्थान के वाग्वर क्षेत्र का संभाग मुख्यालय है। संस्कृति और सनातन जीवन पद्धति के वैभव से ''लोढ़ी काशी'' संज्ञा से विभूषित वाग्वर नगरी ''बाँसवाड़ा'' अपनी सांस्कृतिक समृद्धि, पुरा–वैभव और भाषा–साहित्य की श्रेष्ठता के कारण आज भी सनातनता के प्रबल और सतत प्रवाह की सह–यात्री बनी हुई है। जनजातीय संस्कृति की प्रधानता न केवल जीवन शैली है बल्कि पूरे क्षेत्र में अपनी विशिष्टता में भी अद्वितीय है।

पूज्य गोविद गुरु के नेतृत्व में मानगढ़ पहाड़ी पर संघर्ष एवं बलिदान की गाथा इतिहास में अमिट तो है ही, आज भी युग–समृद्धि एवं देश के गौरव एवं राष्ट्रभक्ति के लिए प्रेरणा का सशक्त स्रोत है। शक्ति की अधिष्ठात्री माँ त्रिपुर सुंदरी' शक्तिपीठ पूरे क्षेत्र को शक्ति–भक्ति की प्रेरणा देती है। माही नदी और माही बांध 'वाग्वर वसुधा' को शाश्वत हरीतिमा और विकास के अनेकानेक क्षितिज प्रदान करते हैं। इसकी भू–सांस्कृतिक स्थिति, राजस्थान, गुजरात और मध्य प्रदेश की सीमाएँ इसकी सांस्कृतिक विशिष्टता को एक अद्वितीय रूप प्रदान करती है।

गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय बाँसवाड़ा

गोविंद गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय, बाँसवाड़ा का ध्येय उच्च शिक्षा, अनुसंधान, नवाचार और विकास प्रदान करना है। इसका उद्देश्य नए ज्ञान का निर्माण करना, व्यावसायिक कौशल को प्रखर करना और कार्यात्मक लोकतंत्र के अत्यधिक पोषित आदर्शों के आधार पर समाज के पुनर्निर्माण के लिए होनहार युवा पीढ़ी के बीच उचित दृष्टिकोण विकसित करना है। विश्वविद्यालय युवाओं को उनकी वर्तमान शैक्षणिक आवश्यकताओं और उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए गुणवत्ता–उन्मुख–सार्थक उच्च शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

राष्ट्रीय वेद विमर्श : बीज सूत्र एवं प्रदेय

भारत–वेद भूमि, देव भूमि, पुण्य भूमि है जहाँ 'वसुधैव कुटुम्बकम्' एवं 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का जयघोष है। भारतीय सनातन परम्परा में – ज्ञान के चौदह स्रोतों के उल्लेख में वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद), वेदांग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छंद और निरुक्त) पुराण, न्याय–मीमांसा और धर्मशास्त्र माने जाते हैं।

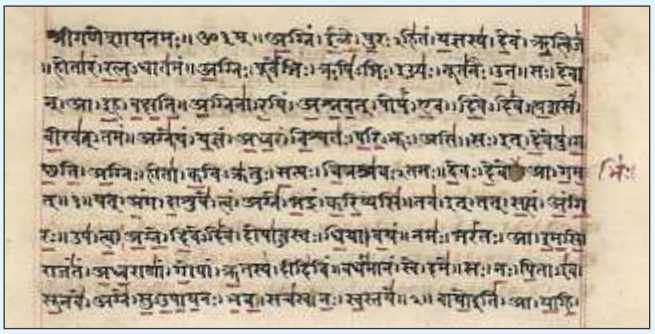

वेद धर्मग्रंथ हैं और वेदांग वैदिक सहायक विज्ञान हैं जो ध्वन्यात्मकता से संबंधित हैं। प्रत्येक वैदिक ग्रंथ में चार प्रकार के ग्रंथ हैं– संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद। प्रत्येक शाखा के लिए विशेष वैदिक व्याकरण नियम हैं। वेद एक उल्लेखनीय सभ्यता के अभिन्न ज्ञान, विज्ञान, परंपरा और संस्कृति के स्रोत हैं। वे प्राचीन काल से जीवित ब्रह्मांडीय ज्ञान के आप्त ज्ञान के मौखिक संकलन हैं। उनकी पहचान केवल धर्मग्रंथों के रूप में ही नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और मानव सभ्यता के स्रोत के रूप में भी की जाती है।

वेद शब्द 'विद्' धातु से निष्पन्न है जिसका अर्थ है ज्ञान, विचार, सत्ता एवं लाभ। 'ज्ञान' का ही दूसरा नाम वेद है। यह वह ज्ञान है जो ब्रह्माण्ड के विषय में सभी विचारों का स्रोत है, जो सदा अस्तित्व में रहता है और जो सभी कालों में मनुष्य को उपयोगी वस्तुओं की प्राप्ति और उसके उपयोग के उपाय बताता है। यह किसी एक साहित्यिक कृति को संदर्भित नहीं करता है, बल्कि साहित्य के एक विशाल भंडार को इंगित करता है, जो कई शताब्दियों के दौरान उत्पन्न हुआ और मौखिक प्रसारण द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होता रहा है। 'वेद' को 'श्रुति' भी कहा जाता है जिसका अर्थ है जो सुना जाता है। मनुष्य के जीवन को शुभ संस्कारों द्वारा सुसंस्कृत करने के लिए ऋषियों द्वारा अनुभूत ज्ञान वेदों में सुरक्षित है। जीवन के लिए आवश्यक ज्ञान वेदों से प्राप्त है। यह तथ्य निर्विवाद है कि 'ऋग्वेद' सम्पूर्ण विश्व साहित्य में प्राचीनतम ग्रन्थ है।

भारतीय पारंपरिक विचारों के अनुसार 'वेद' को प्रकट धर्म ग्रंथ, स्वयं सिद्ध और स्वयं प्रामाणिक माना जाता है । इसकी रचना किसी मानव लेखक द्वारा नहीं की गई है। वैदिक भजन (सूक्त) या छंद (मंत्र) केवल ऋषियों द्वारा देखे और बोले जाते हैं। ये ऋषि न तो मन्त्रों के रचयिता हैं और न ही मन्त्रों की विषय–वस्तु के लिए उत्तरदायी हैं। महान वैदिक भाष्यकार सायण ने वेद की एक परिभाषा दी है –

इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरू अलौकिकं उपायं
यो ग्रन्थो वेदयति स वेदः

इसका अर्थ है, **'जो शास्त्र वांछनीय को प्राप्त करने और अवांछनीय को त्यागने की दिव्य विधि का वर्णन करता है, उसे वेद कहा जाता है।'**

सामान्यतः 'वेद' शब्द उच्चतम, पवित्र, शाश्वत और दिव्य ज्ञान के साथ–साथ उस ज्ञान को मूर्त रूप देने वाले ग्रंथों का भी द्योतक है। वेद भारतीय संस्कृति के मूलाधार हैं। जो ज्ञान सृष्टि के आदिकाल में दिया जाता है वही ज्ञान ईश्वरीय ज्ञान कहलाता है। ज्ञान की दृष्टि से वेद एक ही है किंतु विषय की दृष्टि से चार विभाग किए गए हैं। ऋग्वेद ज्ञान का भंडार, यजुर्वेद कर्म का द्योतक, सामवेद संगीत विद्या का धनी तथा अथर्ववेद विज्ञान का पितामह है।

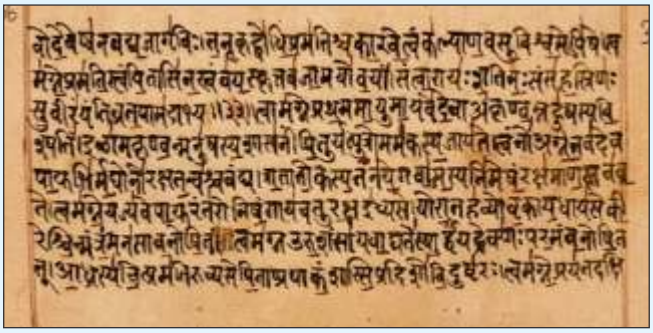

वेद का महत्व अनेक गुना है। यह सर्वमान्य है कि वेद मानवता का सबसे प्राचीन उपलब्ध साहित्य है। संस्कृत भाषा में गद्य और पद्य के रूप में वेद को प्रामाणिक ज्ञान माना गया है। ऐसा लगता है कि इसका अधिकार कई सहस्राब्दियों तक निर्विवाद रहा है और इसे धर्म या दर्शन या सामाजिक रीति–रिवाजों के विवाद के मामलों में अंतिम न्यायाधिकरण माना गया है।

वेद में सर्वोच्च आध्यात्मिक ज्ञान 'परा विद्या' के साथ–साथ दुनिया का ज्ञान 'अपरा विद्या' भी शामिल है। इस प्रकार दर्शन के अलावा, हमें यहां विज्ञान, चिकित्सा, राजनीति विज्ञान, मनोविज्ञान, कृषि, कविता, कला, संगीत आदि जैसे विभिन्न विषयों के विभिन्न पहलुओं का वर्णन मिलता है। वेद अपनी शुद्धता एवं पवित्रता में अद्वितीय है। वेद का पाठ हजारों वर्षों के बाद भी बिना किसी परिवर्तन या प्रक्षेप के अपने शुद्ध और मूल रूप में संरक्षित है। वेद ही सच्चे ज्ञान का एकमात्र शुद्ध भण्डार है। इतना कि यूनेस्को ने भी इसे मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा घोषित कर दिया, चरम सीमा को चिह्नित किया गया।

वेद सबसे प्राचीन होते हुए भी आज तक अपने वास्तविक स्वरूप में सुरक्षित हैं। यहां तक कि एक प्रसिद्ध यूरोपीय विद्वान मैक्समूलर ने भी स्वीकार किया है कि, वेदों का पाठ हमें इतनी सटीकता और देखभाल के साथ सौंपा गया है कि शब्दों में शायद ही कोई बदलाव हुआ है,यह पूरे वेदों का विशिष्ट पहलू है। इसका श्रेय वैदिक द्रष्टाओं 'ऋषियों' को जाता है, जिन्होंने वेदों के पाठ को अक्षरशः सुरक्षित और संरक्षित करने के साधन अपने सभी उपकरणों के साथ तैयार किये।

वेद जीवन ग्रंथ हैं। यह हमें जीवन जीने की कला सिखाता है। वेद संपूर्ण प्राणिमात्र के कल्याण के लिए हैं। जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश सबके लिए है, वायु सबके लिए है, ठीक उसी प्रकार वेद का ज्ञान सबके लिए है। इसलिए वेद को माता कहकर संबोधित किया गया है।

विश्व साहित्य एवं संस्कृति के इतिहास में वेदों का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इनकी दृढ़ आधारशिला पर भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का विशाल एवं भव्य भवन प्रतिष्ठित है। ये संसार के प्राचीनतम एवं विशाल ग्रन्थ हैं। प्राचीन भारतीय ऋषियों को जो दिव्य अनुभूति हुई, वही वेद मन्त्रों के रूप में अभिव्यक्त हुई। इन मन्त्रों में विभिन्न देवताओं की स्तुतियाँ, ज्ञान–विज्ञान, कर्मकाण्ड, दर्शन, आयुर्वेद, वास्तुकला आदि सभी विधाएँ समाविष्ट हैं। सभी भारतीय दर्शन वेदों से अनुप्राणित हैं। वेदों से उच्चकोटि की नैतिक शिक्षा तो मिलती ही है, इनमें श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों के दर्शन होते हैं। आधुनिक विज्ञान के प्राचीनतम बीज भी वेदों में उपलब्ध होते हैं।

वेद भारत में प्राचीन ज्ञान और दर्शन की सबसे प्रारंभिक रचनाएँ हैं, हमारी सभ्यता, संस्कृति, विचार और दर्शन वेदों में निहित हैं। वेद ज्ञान का स्रोत हैं और हमें आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक और राजनीतिक क्षेत्रों में आगे बढ़ने और उच्च नैतिक और नैतिक मानकों को बनाए रखने के लिए मार्गदर्शन करते हैं। वैदिक दर्शन कहता है कि सत्य, अहिंसा, धैर्य, तपस्या और आध्यात्मिक उत्थान मानव जीवन की नींव हैं। वेद धार्मिक सद्भाव, समानता और राष्ट्र की उन्नति का संदेश देते हैं। ऋग्वेद, श्लोक 5.60.5 वेदों के अनुसार, समाज में कोई भी व्यक्ति बड़ा या छोटा नहीं है।

'वेदों की ओर लौटें' संदेश का समर्थन प्रसिद्ध प्राच्य विद् मैक्स मूलर ने किया है। प्रसिद्ध दार्शनिक और नोबेल पुरस्कार विजेता मौरिस मैटरलिंक ने कहा था कि वेद सभी ज्ञान का एक मात्र और अतुलनीय स्रोत हैं। 'दुनिया के सभी प्रमुख धर्म वेदों के मूल आध्यात्मिक मूल्यों – एक ईश्वर, एक ब्रह्मांड, एक मानव परिवार – से प्रेरित हैं, मानवतावाद, मनुर्भव, यानी मानव बनें, का स्पष्ट आह्वान है।' वेद हमें सिखाते हैं कि कैसे अधिक न प्राप्त करें, बल्कि अधिक बनें और अधिक जिएं, कम लें और अधिक दें, और कैसे वास्तव में सेवा करें और अधिक प्यार करें।

मुख्य संरक्षक

प्रो. केशव सिंह ठाकुर
कुलपति

सह संरक्षक
राजेन्द्र प्रसाद अग्रवाल
कुलसचिव

अरविन्द शर्मा
वित्त नियंत्रक

संयोजक एवं आयोजन सचिव
प्रो. अलका रस्तौगी
निदेशक (शोध)

सह संयोजक
प्रो. मनोज पंड्या
परीक्षा नियंत्रक

डॉ. नरेंद्र पानेरी
प्रभारी सम्बद्धता

आयोजन समिति
प्रो. लक्ष्मण लाल परमार, उप कुलसचिव
डॉ. कृष्ण बलदेव सिंह राठौड़, प्रभारी, वेद विद्यापीठ
डॉ. अर्पित पाठक, प्रभारी, परीक्षा
जीतेंद्र कुमार कलाल, सहप्रभारी, अकादमिक अनुभाग

तकनीकी सत्र
डॉ. प्रमोद वैष्णव, आचार्य 'संस्कृत'
डॉ. विशेष पंड्या, प्राचार्य
डॉ. गुलाबधर द्विवेदी, प्राचार्य

उपविषय

- आध्यात्मिक विज्ञान
- वैदिक यज्ञ (वैदिक अग्निहोत्र) के वैज्ञानिक आयाम, योग विज्ञान
- भारतीय वेद और संगीत, नृत्य
- भारतीय भाषाएँ (संस्कृत, हिन्दी, गुजराती, ओडिया, मराठी, पंजाबी, तमिल आदि) और इनके अन्तर्सम्बन्ध
- भारतीय साहित्य में प्रतिबिम्बित संस्कृति
- वैदिक मनोविज्ञान तथा आधुनिक मनोविज्ञान
- भारतीय परम्पराओं और उत्सवों का वैज्ञानिक महत्व
- भारतीय संस्कृति का सार्वभौम महत्त्व
- भारतीय दार्शनिक परम्परा
- प्राचीन भारत की सांस्कृतिक विरासत
- वैदिक सामाजिक विज्ञान
- वैदिक राजनीति विज्ञान
- प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति
- वैदिक विज्ञान का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव
- वैदिक शिक्षा पद्धति और भारतीय खेल और उत्तम स्वास्थ्य
- वेदों में नारी शिक्षा
- वेद एवं विज्ञान : भौतिकी, आयुर्वेद, रसायन गणित, खगोल, पर्यावरण, सूक्ष्मजीव विज्ञान, धातु विज्ञान, जल विज्ञान, सृष्टि उत्पत्ति विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, स्थापत्य विज्ञान, कृषि विज्ञान, अभियान्त्रिकी एवं तकनीकी
- वैदिक प्रबन्धन
- वर्तमान शैक्षणिक व्यवस्था में भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रासंगिकता

कार्यक्रम

प्रथम दिवस

- पंजीकरण एवं अल्पाहार
- शुभारम्भ सत्र
- चाय
- प्रथम तकनीकी सत्र: ऋग्वेद : विषय वस्तु एवं प्रासंगिकता
- मध्याह्न भोजन
- द्वितीय तकनीकी सत्र: यजुर्वेद: विषय वस्तु एवं प्रासंगिकता

द्वितीय दिवस

- अल्पाहार
- प्रथम तकनीकी सत्र सामवेद : विषय वस्तु एवं प्रासंगिकता
- चाय
- चतुर्थ तकनीकी सत्र अथर्व वेद : विषय वस्तु एवं प्रासंगिकता
- मध्याह्न भोजन
- समापन समारोह

सम्पर्क सूत्र

9413625870, 9414308404, 9001675959

E-mail : vedvigyanggtu@gmail.com

महत्त्वपूर्ण तिथियाँ एवं शुल्क

शोधपत्र सारांश जमा करने की अन्तिम तिथि

10 दिसम्बर, 2023

छात्र 300/–, शोधार्थी 500/–, शिक्षक 700/–,
कॉरपोरेट 1000/–, उद्योग प्रतिनिधि 1000/–

बैंक विवरण : एक्सिस बैंक

खाता नंबर : 0918010030341794

IFSC : UTIB0000582

पंजीकरण शुल्क इलेक्ट्रॉनिक धनराशि अन्तरण (ऑनलाइन मनीट्रांसफर) के माध्यम से जमा किया जाएगा। ऑनलाइन पंजीकरण शुल्क जमा करने के उपरान्त उसका स्नेपशॉट और यू.टी.आर. नम्बर vedvigyanggtu@gmail.com पर भेजना सुनिश्चित करें। ई मेल के विषय अनुभाग में "Payment Registration Fees & Name of the participant" लिखकर भेजें।

शोधालेख के नियम

- केवल माइक्रोसॉफ्ट वर्ड प्रारूप में कंप्यूटर टाइप किए आलेख ही स्वीकार्य ।
- टेक्स्ट फॉण्ट – अंग्रेजी – टाइम्स न्यू रोमन; हिंदी– कृति देव/यूनिकोड 10 फ़ॉन्ट आकार– शीर्षक के लिए 14 अंक (सभी बोल्डकैप्स); लेखक के नाम के लिए 11 अंक (उपसर्ग के बिना सभी बड़े अक्षर इटैलिक काले); सार के लिए 11 अंक; मुख्य पाठ के लिए 12 अंक ... फुटनोट के लिए 10 अंक .... पंक्ति रिक्ति– मुख्य पाठ के लिए 1.5 (ऑटो) और फुटनोट के लिए 1.0 (ऑटो)
- पांडुलिपियों को जमा करने के लिए फुटनोट में पहले पृष्ठ पर शैक्षिक योग्यता, पदनाम / व्यावसायिक स्थिति, विश्वविद्यालय / संगठन का नाम और ई–मेल आईडी होनी चाहिए। लेख/पेपर में फुटनोट्स सहित 4,000 से 5,000 शब्द होंगे। लेखों और शोध पत्रों का पूरा पाठ इस प्रकार होगा – लगभग 250 शब्दों में एक सार; की वर्ड 5 शब्दों से अधिक नहीं;
- पेपर में एक परिचय और निष्कर्ष शामिल होना चाहिए। योगदानकर्ताओं को फुटनोटिंग के एक निर्धारित पैटर्न का पालन करना आवश्यक है सभी प्रस्तुतियाँ एक कवर लेटर और लेखक का संक्षिप्त सीवी के साथ होंगी। पांडुलिपि को vedvigyanggtu@gmail.com पर ई–मेल किया जाएगा।
- सार प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि : 10/12/2023
- पूर्ण पेपर प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि : 15/12/2023

नोट: केवल चयनित पूर्ण पत्रों को ही प्रस्तुति की अनुमति दी जाएगी।

संगोष्ठी प्रकाशन : चयनित और समीक्षित शोधपत्र आईएसबीएन नम्बर युक्त सम्पादित ग्रन्थ में प्रकाशित किए जाएँगे। मौलिक शोधपत्र प्रकाशन हेतु जमा किए जा सकते हैं। उल्लेखनीय है कि शोधपत्र की शब्द सीमा 5000 शब्दों से अधिक नहीं होनी चाहिए। शोधपत्र प्रकाशन और जमा करने की नियमावली की विस्तृत सूचना संगोष्ठी के समय अधिसूचित की जाएगी।

पंजीकरण हेतु लिंक

https://forms-gle/sDJRoyL1bmKpvfkp7

संगोष्ठी स्थल

मुख्य परिसर, माही भवन,
माही डेम रोड़, गाँव बड़वी,
बाँसवाड़ा पिन 327001 राजस्थान)